

पद १३८

(राग: परज - ताल: धुमाळी)

अहमन्नं हे चित्रजग (दृश्य) मी हो। अहमन्नादभक्षक मी हो॥धु.॥
जड जडा नोळखे नोपकारी। सर्व भोगा (विषया) भासवी
अंगीकारी। महाप्रपंची विश्वसंसारी। पुण्य पापिष्ट बद्ध मुक्त मी
हो॥१॥ भोगविषया विस्मरण, स्मरण आहे। स्वात्मसंबंधी भ्रान्ति
बोध नोहें। मी नव्हे म्हणे तोचि आहे। शून्य सौभाग्य शक्ति मी
हो॥२॥ आत्मशक्तीचा चोज सांगवेना। मी चैतन्य परि उमजेना।
हतभाग्या हा लाभ जोडवेना। चिन्मार्तांड शिष्य गुरु मी हो॥३॥